Date
11-05-20

B.Ed-I

Sub - Philosophical & Sociological perspectives of Education.

प्लेटो ⇒ 428 - 374 B.C -

* प्लेटो के दार्शनिक चिंतन को नैतिक आदर्श कहा जाता है।
* इन्होंने दो प्रकार के संसार की कल्पना की, एक तो प्रत्ययों का संसार तथा दूसरा इन्द्रियों में अनुभव होने वाला संसार।
* ब्रह्माण्ड को दो भागों - विचार जगत तथा वस्तु जगत में बाटाँ।
* इनके अनुसार इस संसार में वस्तुओं की अपेक्षा विचार अधिक महत्वपूर्ण, मौलिक, विनाशहीन, पूर्ण एवं शाश्वत हैं, वे ही सत्य हैं।
* ये सत्यं शिवं सुन्दरम् को जीवन के शाश्वत मूल्य एवं आदर्श मानते थे।
* ये ज्ञान को तीन रूप - इन्द्रियजन्य, सम्मतिजन्य तथा चिंतनजन्य में विभाजित करते हैं।
* ये मनुष्यों में चार सद्गुणों - संयम, धैर्य, ज्ञान एवं न्याय का होना आवश्यक मानते थे।
* इन्होंने विश्वप्रसिद्ध पाठशाला 'अकेडमी' की स्थापना की।
* इनकी प्रमुख रचना - रिपब्लिक है।
* इन्होंने शिक्षा को सद्गुण उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया माना है।
* शिक्षा की प्रक्रिया ऐसी हो जो व्यक्तियों को नागरिकता के गुणों एवं आदर्शों की प्राप्ति कराये और आज्ञा पालन एवं शासन करना सिखाये।
* इन्होंने पाठ्यक्रम को शैशवकाल नर्सरी, प्रारंभिक स्तर, माध्यमिक स्तर, व्यायाम काल (जिम्नास्टिक), उच्च शिक्षा तथा उच्चतम शिक्षा में विभाजित किया।
* इनकी विधि का विशेष विशेष बल था।
* शिक्षा पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए।
* इन्होंने बालिका शिक्षा को अधिक महत्व दिया।

Scanned with CamScanner